सतना जिले का भूमि उपयोग

[LAND UTILIZATION IN SATNA DISTRICT]

भूगोल विषय की पीएच. डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

१९७४

निर्देशक:—

प्रो० जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव

अध्यक्ष भूगोल विभाग

ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा

लेखक:-

बी. एम. पी. शर्मा

सहायक प्राध्यापक भूगोल

महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (म० प्र०)

सतना जिले का भूमि उपयोग

(LAND UTILISATION IN SATNA DISTRICT)

लेखक

बी०एम०पी० शर्मा ,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल
शासकीय महाविद्यालय, छतरपुर, मध्यप्रदेश

-: प्रमाण - पत्र :-

प्रमाणित किया जाता है कि श्री ब्रजमोहन प्रसाद शर्मा, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर ने मेरे मार्ग निर्देशन में शोध कार्य किया तथा सतना जिले का भूमि उपयोग (LAND UTILIZATION IN SATNA DISTRICT) शीर्षक संलग्न शोध प्रबन्ध, जिसे वे प्रस्तुत कर रहे हैं, उनका मौलिक कार्य है ।

यह शोध प्रबन्ध विधिवत पूरा किया गया तथा अन्तर्वस्तु एवं साहित्यिक प्रस्तुतीकरण दोनों ही दृष्टियों से यह इस स्तर का है कि इसे परीक्षकों को सम्प्रेषित किया जा सकता है ।

गणेश चतुर्थी
सन् १९७४ ई०

जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव

(जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव)
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग
ठाकुर रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रीवा, मध्य प्रदेश

-२-

-: प्राक्कथन :-

भारत जैसे कृषि प्रधान एवं विकासशील राष्ट्र की योजनाबद्ध प्रगति के लिए देश के भू-संसाधन का सम्यक उपयोग परमावश्यक है,क्यों कि [illegible] आत्मनिर्भरता,एवं सन्तुलित विकास वहां के नव[illegible]

[illegible] सकता है । किसी विशिष्ट क्षेत्र के [illegible] लघु क्षेत्रीय इकाइयों (Micro- [illegible] भौगोलिक अध्ययन नितान्त आवश्यक [illegible] के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कृषि [illegible] शोधकार्य किये जा रहे हैं,किन्तु आज भी लघु क्षेत्रीय इकाई स्तर पर शोधकार्य का अभाव है,जिसकी राष्ट्र को अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता है। लेखक का प्रस्तुत प्रयास इसी दिशा में एक कदम है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में लेखक ने सतना जिले के भूमि उपयोग का भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन किया है। सतना जिला अर्थात् उपरि टोन्स एवं सोन बेसिन,प्रदेश का एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र है, यहां विकास की वृहद सम्भावनाओं के बावजूद,संसाधनों का उचित उपयोग नहीं हो सका है। बाणसागर परियोजना इसी दिशा में एक उपयुक्त कदम है।

जिले के भूमि उपयोग के अध्ययन हेतु राजस्व निरीक्षक मण्डलों को निम्नतम् इकाई मानते हुए २७ रा०नि० मण्डलों के भूमि उपयोग एवं शस्य-प्रतिरूपों का विश्लेषण किया गया है। वर्ष १९७१-७२ को इस अध्ययन हेतु आधार वर्ष माना गया है,क्योंकि जिले में इस वर्ष वर्षा सामान्य हुई तथा अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि का प्रकोप नहीं हुआ । मानचित्रों तथा आंकड़ों के अतिरिक्त विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त सूचनाएं एवं लेखक द्वारा सर्वेक्षित प्रतिदर्श ग्रामों को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है ।

सुनियोजित अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के कलेवर को भौतिक आधार, भूमि उपयोग एवं प्रतिदर्श ग्रामों का अध्ययन, इन तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। अन्त में बाणसागर बहुउद्देश्यीय परियोजना का जिले के भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप पर सम्भावित प्रभाव,का भी विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत शोधकार्य के यथेष्ट सम्पादन में लेखक को कई विद्वान प्राध्यापकों,शासकीय ,अर्द्धशासकीय एवं अशासकीय क्षेत्रों से सहयोग प्राप्त हुए हैं। इनमें गुरुवर प्रो० अम्बिका प्रसाद जी श्रीवास्तव,आचार्य एवं विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग,ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,रीवा का स्थान सर्व प्रथम है, जिनके अमूल्य सुझावों एवं निर्देशनों के फलस्वरूप प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इस रूप में प्रस्तुत हो सका । लेखक हृदय से आपका आभारी है ।

इनके अतिरिक्त डा० विनोद चन्द्र जी मिश्र,अध्यक्ष ,सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल, सागर विश्वविद्यालय,डा० आर०एन० त्रिवेदी,अध्यक्ष भूगोल विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डा० विद्याबन्धु त्रिपाठी,भूगोल विभाग व्ही०एस०एस०डी० महाविद्यालय,कानपुर का भी लेखक हृदय से आभारी है, जिनसे समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण निर्देशन एवं सुझाव प्राप्त होते रहे हैं।

लेखक, डा० एस०एन० मेहरोत्रा, एम०ए०पी-एच०डी०,प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय,टीकमगढ़ का भी उनके प्रेरणास्पद सुझावों के लिए कृतज्ञ है । डा० यू०के० सक्सेना, एम०ए० पी-एच०डी०अध्यक्ष,शासकीय महाविद्यालय, मन्दसौर से शोध विधितन्त्र के सन्दर्भ में वार्तालाप विशेष उपयोगी था। इस सहयोग के लिए लेखक उनका कृतज्ञ है।

इनके अतिरिक्त ,अधीक्षक भू-अभिलेख ,सतना ,उप संचालक कृषि, वन मण्डलाधिकारी, भूमि सुधार एवं भू-संरक्षण, सिंचाई,सामुदायिक विकास खण्ड एवं अन्य स्वायत्त संस्थाओं के अधिकारियों के प्रति भी लेखक आभारी है, जिनसे जिले के भूमि उपयोग से सम्बद्ध अभीष्ट सूचनाएं उपलब्ध हुई ।

इसके साथ लेखक अपने समस्त मित्रों एवं शुभ चिन्तकों को भी धन्यवाद ज्ञापन करता है जिन्होंने इस कार्य के सम्पादन में यथा समय प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान किया ।

अन्त में,प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के टंकणकर्ता श्री मोतीलाल जी पाण्डेय भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिनकी उत्तम कार्य कुशलता के फलस्वरूप यह कार्य यथा समय पूर्ण हो सका ।

गणेश चतुर्थी

सन् १९७४

छतरपुर ,

(हस्ताक्षर)

ब्रजमोहन प्रसाद शर्मा

सहायक प्राध्यापक भूगोल ,

महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (मध्यप्रदेश)

-: अनुक्रमणिका :-

पृष्ठ

कथन --- --- चार

मणिका --- --- छः

चित्र एवं आरेखों की संख्या --- --- बारह

णियों की संख्या --- --- चौदह

शणिकाओं की संख्या --- --- बीस

ाय एवं विधि तन्त्र:- सामान्य परिचय,शोध में भूमि उपयोग- --- १-१६
का लक्ष्य , भूमि उपयोग की भौगोलिक अवधारणा ,
क्षेत्र का चुनाव, स्थिति ,सीमा एवं विस्तार,ऐतिहासिक
पृष्ठ भूमि ब्रिटिश काल ,स्वातन्त्र्योत्तर काल, आंकड़ों के-
स्रोत ,शोध कार्य का आयोजन ।

खण्ड - १

भौतिक आधार

ाय-१ --- २०-३८

भूविज्ञान एवं भूआकृति :-

भूविज्ञान ;- जिले का भूवैज्ञानिक क्रम,उपरिविन्ध्यन,
नाण्डेर माला, रीवा माला, गनुरगढ़ शैल, कैमोर माला,
अवर्गीकृत रवेदार शैल, बिजावर शैल, निम्न विन्ध्यन शैल
समूह, सिमरी माला, जिले का आर्थिक भू-विज्ञान ।

उच्चावच :- उच्च भू-भाग निचले मैदानी भूभाग ,भौतिक
विभाग,टमस नदी बेसिन ,सोन नदी बेसिन, परसमनियां
पठार,कैमोर पन्ना एवं विन्ध्य पहाड़ ,उत्तरी मैदान ,
उच्चावच एवं भूमि उपयोग ।

ाय-२ --- ३९-५६

अपवाह :-

सामान्य विवरण:- अपवाहतन्त्र,टमस अथवा टौन्सनदी

सतना नदी, अमरान नदी, सिमरावल नदी, अम्हावल नदी
बीहर नदी, सिरैन्धीनाला, बरुवानाला, गुरसेर नाला,
बाधिन नदी, पयस्वनी नदी, सोन नदी, तालाब, बीरियां।

--- ५०-७०

अध्याय-३

जलवायु:-

मौसमी तत्व:- तापमान, वायुभार, आर्द्रता, वर्षा,
वर्षा का वार्षिक वितरण, वर्षा का ऋतु-निष्ठ वितरण
मेघाच्छन्नता, पवन की दिशा एवं गति, अन्य मौसम घटक,
वृष्टि, गर्जन, ओला, कोहरा, एवं सामयिक झंझावात,
ऋतुएं - शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, वर्षा एवं
वर्षा दिवसों की तीव्रता, वर्षा की परिवर्तनशीलता,
जिले में वर्षा की प्रतिशत परिवर्तनशीलता, वार्षिक वर्षा-
विचलन एवं जल-सन्तुलन; जलवायु एवं भूमि उपयोग ।

--- ७१-९०

अध्याय-४

मिट्टियां:-

पैतृक शैलें, ढाल की मात्रा, वनस्पति, उत्तम मिट्टियों
की विशेषताएं- मृदा भौतिकी, मृदा रसायनिकी, मृदा-
प्राणिकी; मिट्टियों का वर्गीकरण, उच्च पठारी क्षेत्रों
की मिट्टियां, मैदानी क्षेत्रों एवं नदी घाटियों की
मिट्टियां, काली दोमट मिट्टियां, लाल एवं भूरी मिट्टियां,
पडुवा मिट्टी, रांकड़ मिट्टी, लेटराइट मिट्टी; मिट्टियों का
परम्परात्मक वर्गीकरण- मेर, सीगों, दोमट, डांड़ी, ऊसर,
माठ; मिट्टियों का स्थानीय विभाजन- गऊघान, सीमार,
मझार, सतना जिले में भूमि उर्वरता; भूमि अपरदन;
मिट्टियां एवं भूमि उपयोग ।

पृष्ठ

अध्याय-५ --- ९९-१०८

वन सम्पदा:-

सामान्य परिचय- जिले में वन नीति का इतिहास, वनों का वितरण, मकरबाई मण्डल, नागौद मण्डल, मैहर मण्डल, सतना मण्डल; वनों के प्रकार-शुष्क सागौन वन, दक्षिणी उष्णकटिबन्धीय शुष्क चौड़ी पत्ती के मिश्रित वन, सलाई-वन, खैर-वन, बांस-वन, करधई-वन; वन उपज- प्रमुख उपजें, लकड़ियां, ईंधन, बांस, तेंदू पत्ती, लघु उपजें- कत्था, चराई, लाख, शहद एवं फल, खालें, सींगें, महुआ, गोंद; वनों की समस्यायें; पंचवर्षीय योजनायें एवं वन विकास कार्यक्रम।

खण्ड-२

भूमि उपयोग

अध्याय-६ --- १०९-१८१

भूमि वर्गीकरण एवं भूमि उपयोग:-

भूमि वर्गीकरण- वर्गीकरण का आधार; भूमि उपयोग- का इतिहास; वर्तमान भूमि उपयोग का सामान्य प्रतिरूप; जिले का कुल क्षेत्रफल, वनों के अन्तर्गत क्षेत्र, कृषि के लिए अप्राप्य क्षेत्र- ऊसर तथा कृषि के लिए अनुपयुक्त भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त भूमि- अधिवास, ग्रामीण एवं नगरीय अधिवास, परिवहन, ग्राम्य पथ, सड़कें, रेलें, एवं वायु परिवहन, परती रहित अन्य अकृषिगत क्षेत्र, चरागाह क्षेत्र, पशुसंख्या एवं वितरण, वीगर झाड़ों के झुण्ड तथा बाग, कृषि योग्य बेकार भूमि, परती-भूमि, नयी परती, पुरानी परती, निरा बोया गया क्षेत्र, द्विफसली क्षेत्र- कुल बोया गया क्षेत्र ।

पृष्ठ

अध्याय-७ --- १८२-२४१

कृषि-प्राविधि:-

जिले में कृषि के सामान्य लक्षण,कृषि कैलेण्डर, शस्य-तकनीक,कृषि-उपकरण,खेतों की जुताई,पटा अथवा कोपर,खाद एवं उर्वरक,सिंचाई के साधन, विभिन्न साधनों से सिंचित क्षेत्र,बोआई, अधिक उपज देने वाले उन्नत बीजों की बोआई, शस्यावर्तन, शस्य प्रतिरूप, खरीफ ,रबी एवं जायद (मुद्रादायिनी) फसलों का सामान्य प्रतिरूप,खरीफ मौसम में भूमि-उपयोग-प्रतिरूप, रबी मौसम में भूमि-उपयोग-प्रतिरूप, प्रमुख रबी फसलें, गेहूं,भौगोलिक परि-स्थितियां, वितरण, गेहूं की किस्में,चना वितरण,अलसी भौगोलिक परिस्थितियां,वितरण,जौ,वितरण,खरीफ फसलें- चावल ,भौगोलिक परिस्थितियां,वितरण,कृषि प्राविधियां,उत्पादन, कोदो,वितरण,ज्वार,वितरण, कृषि पद्धति,उन्नत किस्में,अरहर,तिल,खरीफ तिल,रबी तिल, रेशेदार फसलें, फल एवं सब्जियां , शस्य-परिवर्तन-प्रतिरूप, खरीफ शस्य प्रतिरूप में परिवर्तन, रबी शस्य-प्रतिरूप में परिवर्तन, फसलों का क्षेत्रीय वितरण,प्रतिरूप, शस्य क्रम-विन्यास, शस्य-तीव्रता ।

अध्याय-८ --- २४२-२५६

शस्य-संयोजन एवं शस्य-प्रदेश:-

विधितन्त्र :- वीवर का विधितंत्र,दोई-विधि तंत्र, कोप्पोकिकी-विधि तन्त्र- शस्य संयोजन क्षेत्र-गेहूं-चना क्षेत्र,गेहूं -चना-ज्वार क्षेत्र, गेहूं-अरहर-ज्वार क्षेत्र,चावल-चना क्षेत्र,चावल-अरहर-क्षेत्र,सांख्यकीय विधि, शस्य संयोजन क्षेत्र,-पांच शस्य संयोजन क्षेत्र,छः शस्य संयोजन क्षेत्र सात शस्य संयोजन क्षेत्र,आठ शस्य संयोजन क्षेत्र,नौ शस्य संयोजन क्षेत्र।

खण्ड-३

प्रतिदर्शी ग्राम

अध्याय-९ --- २५७-२६०

प्रतिदर्शी ग्रामों का चयन :-

ग्रामों के चयन की आवश्यकता- चयन का आधार,'अ' वर्ग के ग्राम -सगमनियां,सखा,माधवगढ़,कृष्णापुर,सगौनी, 'ब' वर्ग के ग्राम- बेगनाँ,बढेलियापाठ,पालदेव,तथा कल्या उर्फ कल्याणपुर,प्रतिदर्शी ग्रामों के अध्ययन का आधार, स्थिति,उच्चावच,जलवायु,मिट्टियां,भूमि वर्गीकरण,सिंचाई भूमि-उपयोग,ग्राम का कुल क्षेत्रफल,वन ,कृषि के लिए अप्राप्त क्षेत्र,परती रहित,अन्य अकृषिगत क्षेत्र,परती निराफसली क्षेत्र,द्विफसली क्षेत्र,कुलफसली क्षेत्र,खरीफ एवं रबी मौसमों में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप,प्रमुख फसलें,जनसंख्या एवं भूमि उपयोग,कैलोरी आपूर्ति।

अध्याय-१० --- २६१-४०८

प्रतिदर्शी ग्रामों का भूमि उपयोग:-

अध्याय-११ --- ४०९-४१६

निष्कर्ष एवं सुझाव:-

भूमि उपयोग क्षमता,विधि-तन्त्र ,कोसतक्रम,भूमि की धारक क्षमता,जनसंख्या एवं खाद्यापूर्ति,पोषण के मूल-तत्व, कुल खाद्यान्न उत्पादन,कुल खाद्य आवश्यकतायें, अनाज,दालें,कन्द, फल,सब्जियां,मांस ,अण्डे,शक्कर,वसा,तथा तेल,सतना जिले में भोजन की प्रमुख विशेषतायें;भविष्य में खाद्य की आवश्यकतायें; समस्याओं को हल करने के सुझाव -भूमि उपयोग नियोजन, सामान्य भूमि उपयोग में परिवर्तन,शस्य वितरण में परिवर्तन, सिंचाई,खादें,उर्वरक,विकसित उन्नत बीजों का प्रयोग,मृदा व्यवस्था,औद्योगिक सम्बन्ध, मानवीय उपादान ।

सतना जिले के भूमि उपयोग में प्रस्तावित बाणसागर परियोजना का सम्भावित प्रभाव, कृषि योग्य बेकार भूमि का सदुपयोग, प्रति हैक्टर उपज में वृद्धि ,शस्य प्रतिरूप में परिवर्तन,शस्य तीव्रता में वृद्धि एवं शस्यावर्तन , निष्कर्ष।

:::::

-:मानचित्र एवं आरेख:-

		पृष्ठ
ानचित्र एवं आरेख	--	९
१-(अ) सतना जिले की स्थिति		
(ब) भारत में सतना जिले की स्थिति,		
(स)निर्देश मानचित्र		
२- भूविज्ञान	--	२२
३- भूआकृति	--	२७
४- अपवाह तन्त्र	--	३९
५- जिला सतना -वार्षिक वर्षा	--	५६
६-(अ)हीदरग्राफ (ब) क्लाइमोग्राफ	--	५८
७- औसत मासिक वर्षा एवं दिवस	--	६१
८- वर्षा-परिवर्तनशीलता एवं प्रवृत्ति(१९५७ से १९७२)	--	६३
९- सामान्य वर्षा से विचलन प्रतिशत में(१९०१से१९७२)	--	६७
१०-(अ) तापमान एवं आर्द्रता (ब) जल सन्तुलन	--	६८
११-जिला सतना मिट्टियों के प्रकार	--	७९
१२- भूमि उर्वरता क्षेत्र	--	८७
१३- जिला सतना -प्राकृतिक वनस्पति	--	९६
१४-जिला सतना सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप	--	११२
१५-जिला सतना कृषि के लिए अप्राप्त भूमि(१९७१-७२)	--	१२२
१६-सतना नगर -नगरीय भूमि उपयोग(१९७१-७२)	--	१२४
१७-नागौद-नगरीय भूमि उपयोग(१९७१-७२)	--	१३३
१८- जिला सतना- कृषि योग्य बेकार भूमि(१९७१-७२)	--	१५२
१९-जिला सतना-निरा फसली क्षेत्र(१९७१-७२)	--	१६७
२०- जिला सतना- द्विफसली क्षेत्र(१९७१-७२)	--	१७०
२१- कृषि कैलेण्डर वर्ष	--	१८५
२२- जिला सतना-खरीफ भूमि उपयोग(१९७१-७२)	--	२०२
२३- जिला सतना- रबी भूमि उपयोग(१९७१-७२)	--	२०५
२४- सतना जिले में गेहूं का वितरण(१९७१-७२)	--	२०६

		पृष्ठ
२५-जिला सतना -चना का वितरण(१९७१-७२)	--	२०९
२६-जिला सतना- चावल का वितरण(१९७१-७२)	--	२१४
२७-(अ)कोदो अरहर-(ब)ज्वार-अरहर(स)तिल (द)अलसी का वितरण	--	२२०
२८-सरु-वितरण वारिस	--	२३५
२९-(अ)जिला सतना-शस्य प्रदेश तथा शस्य संयोजन (ब)शस्य क्रम- प्रथम, द्वितीय, तृतीय शस्य क्रम	--	२५२
३०-प्रतिदर्श ग्रामों की अभिगम्यता एवं स्थिति	--	२५९
३१-ग्राम सगमनियां-भूमि वर्गीकरण	--	२६८
३२-ग्राम सगमनियां -भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप (१९७१-७२)	--	२७०
३३-ग्राम सढ़वा- भूमि वर्गीकरण	--	२९०
३४-ग्राम सढ़वा का भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप (१९७१-७२)	--	२९२
३५-ग्राम माधवगढ़-भूमि वर्गीकरण	--	३०५
३६-ग्राम माधवगढ़-भूमि उपयोग एवं शस्यप्रतिरूप(१९७१-७२)	-	३०७
३७-ग्राम कृष्णपुर-भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप (१९७१-७२)	--	३२७
३८-(अ)ग्राम सगौनी-भूमि वर्गीकरण	--	३३७
(ब)भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप(१९७१-७२)	--	३३७
३९-ग्राम बेधना-भूमि वर्गीकरण	--	३५०
४०-ग्राम बेधना-भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप(७१-७२)	--	३५३
४१-ग्राम बहेलियामाठ-भूमि वर्गीकरण	--	३६३
४२- ग्राम बहेलियामाग-भूमिउपयोग एवं शस्यप्रतिरूप(७१-७२)		३६८
४३-ग्राममालिया -भूमिउपयोग एवं शस्यप्रतिरूप(७१-७२)	--	३८४
४४-ग्राम कल्ला उर्फ कल्याणपुर-भूमि वर्गीकरण	--	३९७
४५-ग्राम कल्ला उर्फ कल्याणपुर भूमिउपयोग एवं शस्यप्रतिरूप (१९७१-७२)		४०२

-: सारणी सूची :-

	सारणी		पृष्ठ
१	संसार के विभिन्न देशों में मानव भू-अनुपात	--	३
१-१	सतना जिले का भूवैज्ञानिक प्रक्रम	--	२१
१-२	सतना जिले के रामरज निक्षेपों का अनुमानित भण्डार	--	२५
२-१	टमस अपवाह तन्त्र की प्रमुख नदियां	--	४०
२-२	सतना नदी में पूर्व मानसून ऋतु में जल प्रवाह	--	४२
२-३	अमरान नदी में पूर्व मानसून ऋतु में जलप्रवाह	--	४३
३-१	सतना जिले में मासिक वर्षा का वितरण एवं प्रतिशत	--	५६
३-२	सतना जिले में पवन की दिशा एवं गति	--	५८
३-३	सतना जिले में मौसम घटक दिनसहित	--	५८
३-४	वर्षा ऋतु-निष्ठ वितरण	--	६०
३-५	औसत वार्षिक वर्षा दिवस	--	६१
३-६	सतना जिले में वर्षा की तीव्रता	--	६२
३-७	औसत मासिक प्रतिशत परिवर्तनशीलता	--	६५
३-८	जल सन्तुलन	--	६७
४-१	भारतीय मिट्टियों की रचना	--	७४
४-२	सतना जिले के मिट्टियों की भौतिक संरचना	--	७५
४-३	सतना जिले की मिट्टियों की रासायनिक संरचना	--	७६
४-४	सतना जिले की मिट्टियों के प्रकार	--	८१
४-५	शस्यपोषण की दृष्टि से जिले की भूमि उर्वरताकास्तर-		८५
४-६	प्रतिदर्शग्रामों में भूमिउर्वरता का स्तर	--	८६
४-७	प्रतिदर्श ग्रामों की मिट्टियां एवं भूमि उपयोग	--	९०
५-१	सतना जिले में रक्षित एवं सुरक्षित वनों का क्षेत्रफल	--	९३
५-२	सतना जिले में वनों के प्रकार एवं क्षेत्रफल	--	९९
५-३	जिले की लकड़ियों का मूल्यांकन	--	१०१
५-४	सतना जिले के वनों से प्राप्त आय	--	१०२

(क्रमशः--)

			पृष्ठ
५-५	जिले में कस्बों की संख्या	--	१०३
५-६	चराई से प्राप्त आय	--	१०४
६-१	सतना जिले का भूमि उपयोग	--	११४
६-३	सतना जिले का कुलदौत्रफल	--	११६
६-४	जिला सतना वन दौत्र फल	--	११७
६-५	सतना जिले में वनों का दौत्रफल	--	११८
६-६	रीवा संभाग के जिलों में प्रति व्यक्ति वन दौत्र	--	१२१
६-७	सतना जिले में ग्रामों का वर्गीकरण	--	१२२
६-८	जनसंख्यानुसार ग्रामों का आकार	--	१२२
६-९	सतना नगर की जनसंख्या में वृद्धि	--	१२५
६-१०	सतना नगर का नगरीय भूमि उपयोग	--	१२६
६-११	सतना जिले में कृषि के लिये अप्राप्त भूमि	--	१४०
६-१२	जिला सतना चरागाह दौत्र का वितरण	--	१४५
६-१३	सतना जिले के चरागाह दौत्र	--	१४६
६-१४	दीगर वृक्षों एवं बगीचों का दौत्र वितरण	--	१४९
६-१५	सतना जिले में फलों एवं दीगर वृक्षों का दौत्रफल	--	१४९
६-१६	जिले में रा०नि० मण्डलानुसार फलों एवं दीगरवृक्षोंका-दौत्रफल	--	१५०
६-१७	जिला सतना कृषि योग्य बेकार भूमि	--	१५२
६-१८	सतना जिले में परती भूमि का तुलनात्मकदौत्रफल	--	१५७
६-१९	सतना जिले में परती भूमि का ह्रास एवं वृद्धि	--	१५८
६-२०	निरा फसली दौत्र का वितरण	--	१६३
६-२१	सतना जिले में निरा बोया गया दौत्र	--	१६५
६-२२	सतना जिले में द्विफसली दौत्र का वितरण	--	१६९
६-२३	जिला सतना में द्विफसली दौत्र	--	१७०
६-२४	कुल फसली दौत्र का वितरण	--	१७३
६-२५	कुल फसली दौत्र	--	१७४
६-२६	जिला सतना में रा०नि०मण्डलवार कुल फसलीदौत्र	--	१७५

(क्रमशः--)

			पृष्ठ
६-२७	सतना जिले में जनसंख्या एवं फसली क्षेत्र का अनुपात	--	१७६
७-१	सतना जिले में जीविकोपार्जन प्रतिरूप	--	१८२
७-२	खेतों का आकार	--	१८३
७-३	सतना जिले में कृषि उपकरणों की संख्या	--	१८६
७-४	कृषि उपकरणों में वृद्धि	--	१८७
७-५	विभिन्न फसलों के लिए अभीष्ट जुताई की गहनता	--	१८९
७-६	प्रति हेक्टर उर्वरकों का उपयोग	--	१९०
७-७	सतना जिले में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग	--	१९२
७-८	जिले में पौध संरक्षण कार्यक्रम	--	१९२
७-८	सतना जिले का सिंचित क्षेत्र	--	१९३
७-९	कृषि प्रक्षेत्रों से वितरित बीज की मात्रा	--	१९६
७-१०	निरा फसली क्षेत्र का उपयोग	--	१९९
७-११	सतना जिले की कृषि मे खरीफ एवं रबी फसलोंका क्षेत्र-		२००
७-१२	खरीफ भूमि उपयोग	--	२०२
७-१३	रबी भूमि उपयोग	--	२०४
७-१४	रीवा संभाग में अलसी क्षेत्रका तुलनात्मक विवरण	--	२१०
७-१५	सतना जिले में जौ क्षेत्र का प्रतिशत	--	२१३
७-१६	अमरपाटन रा० नि० मण्डल में चावल की गहनता	--	२१४
७-१७	सतना जिले में ज्वार क्षेत्र	--	२२०
७-१८	सतना जिले में तिल का क्षेत्र	--	२२४
७-१९	सतना जिले में तम्बाकू का क्षेत्रफल एवं उत्पादन	--	२२५
७-२०	सतना जिले में फल एवं सब्जियों के क्षेत्र का तुलनात्मक विवेचन	--	२२६
७-२१	सतना जिले का शस्य प्रतिरूप	--	२३०
७-२२	सतना जिले का शस्य परिवर्तन प्रतिरूप	--	२३१
७-२३	सतना जिले में शस्य क्रम विन्यास क्षेत्र	--	२३५
७-२४	सतना जिले में शस्य क्रम विन्यास क्षेत्र	--	२३७
७-२५	सतना जिले में शस्य तीव्रता सूचकांक	--	२४०
८-१	वीबर का सैद्धान्तिक वक्र	--	२४७

			पृष्ठ
८-२	वीवर विधि तन्त्र	--	२४४
८-३	क्रोस्टोविकी तकनीक	--	२४७
८-४	सतना जिले के शस्य संयोजन क्षेत्र(क्रोस्ट्रोविकीकेअनुसार)	-	२४८
१०-१	ग्राम सगमनियां में मासिक वर्षा का वितरण	--	२६३
१०-२	ग्राम सगमनियां में औसत मासिक आर्द्रता	--	२६५
१०-३	ग्राम का भूमि उपयोग	--	२६८
१०-४	ग्राम सगमनियां खरीफ भूमिउपयोग एवं शस्यप्रतिरूप	--	२७४
१०-५	खरीफ फसलों का प्रति हेक्टर उत्पादन	--	२७६
१०-६	सगमनियां रबी भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	२७९
१०-७	रबी फसलों का प्रति हेक्टर उत्पादन	--	२८०
१०-८	जनसंख्या एवं प्रति व्यक्ति भूमि अनुपात	--	२८३
१०-९	कुल कृषक परिवार एवं कृषित भूमि का क्षेत्रफल	--	२८४
१०-१०	जनसंख्या का जातिगत विवरण	--	२८५
१०-११	ग्राम सगमनियां का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	२८६
१०-१२	ग्राम सहवा की औसत वर्षा	--	२८८
१०-१३	ग्राम सहवा भूमि -उपयोग	--	२९१
१०-१४	खरीफ भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	२९२
१०-१५	रबी शस्य में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	२९४
१०-१६	ग्राम सहवा में प्रति व्यक्ति भूमि अनुपात	--	२९७
१०-१७	ग्राम सहवा का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	२९९
१०-१८	ग्राम माधवगढ़ की औसत वर्षा	--	३०३
१०-१९	ग्राम माधव गढ़ भूमिउपयोग	--	३०६
१०-२०	खरीफ शस्य में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	३०८
१०-२१	रबी शस्य में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	३१०
१०-२२	जनसंख्या एवं भूमि अनुपात	--	३१३
१०-२३	ग्राम के कुल कृषक परिवार एवं क्षेत्रफल	--	३१४
१०-२४	ग्राम माधवगढ़ का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	३१५
१०-२५	ग्राम कृष्णापुर की औसत मासिक एवंवार्षिक वर्षा	--	३२०
१०-२६	ग्राम कृष्णापुर का भूमि उपयोग	--	३२३

(क्रमशः---)

			पृष्ठ
१०-२७	ग्राम कृष्णापुर का खरीफ भूमि उपयोग	--	३२५
१०-२८	ग्राम कृष्णापुर का रबी भूमि उपयोग एवं शस्यप्रतिरूप	--	३२७
१०-२९	जनसंख्या एवं भूमि का प्रति व्यक्ति अनुपात	--	३२९
१०-३०	ग्राम कृष्णापुर में कृषक परिवार एवं कृषि भूमि	--	३३०
१०-३१	ग्राम कृष्णापुर का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	३३१
१०-३२	सगौनी ग्राम में ऋतुवत वर्षा की मात्रा	--	३३४
१०-३३	सगौनी ग्राम का सामान्य भूमि उपयोग	--	३३७
१०-३४	ग्राम सगौनी, खरीफ भूमि उपयोग एवं शस्यप्रतिरूप	--	३३९
१०-३५	रबी मौसम में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	३४०
१०-३६	सगौनी ग्राम में प्रति व्यक्ति भूमि अनुपात	--	३४२
१०-३७	सगौनी ग्राम का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	३४४
१०-३८	बेगना ग्राम में ऋतुवत वर्षा की मात्रा	--	३४७
१०-३९	ग्राम बेगना में भूमि वर्गीकरण	--	३४९
१०-४०	ग्राम बेगना में भूमि उपयोग	--	३५१
१०-४१	ग्राम बेगना, खरीफ शस्य में भूमि उपयोग	--	३५५
१०-४२	ग्राम बेगना रबी शस्य में भूमि उपयोग	--	३५४
१०-४३	ग्राम बेगना में जनसंख्या एवं भूमि का अनुपात	--	३५५
१०-४४	ग्राम के कुल कृषक परिवार एवं कृषित भूमि अनुपात	--	३५६
१०-४५	ग्राम बेगना-खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	३५८
१०-४६	ग्राम बहेलिया माठ का भूमि उपयोग	--	३६३
१०-४८	खरीफ भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	३६४
१०-४९	रबी शस्य में भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप	--	३६६
१०-५०	ग्राम बहेलिया माठ में जनसंख्या एवं भूमि अनुपात	--	३६७
१०-५१	कृषक परिवार एवं भूमि अनुपात	--	३६८
१०-५२	ग्राम बहेलिया माठ का खाद्यसन्तुलन पत्रक	--	३६९
१०-५३	ग्राम बहेलिया माठ में पशुओं की संख्या	--	३७०
१०-५४	ग्राम पालदेव में ऋतु वर्षा एवं वर्षा दिवस	--	३७४
१०-५५	ग्राम पालदेव भूमि वर्गीकरण	--	३७९
१०-५६	भूमि उपयोग	--	३८०

			पृष्ठ
१०-५७	ग्राम पाल्हेपुर में पशुओं की संख्या	--	३८१
१०-५८	खरीफ मौसम में भूमि उपयोग	--	३८२
१०-५९	रबी शस्य में भूमि उपयोग	--	३८५
१०-६०	ग्राम पाल्हेपुर में शस्य वर्तन की प्रक्रिया	--	३८८
१०-६१	ग्राम में प्रतिव्यक्ति भूमि अनुपात	--	३८९
१०-६२	ग्रामवासियों की जीविका प्रतिरूप	--	३९०
१०-६३	कृषक परिवार एवं कुल भूमि का अनुपात	--	३९०
१०-६४	ग्राम पाल्हेपुर में खेतों का आकार	--	३९१
१०-६५	ग्राम कल्याणपुर की ऋतुवत वार्षिक वर्षा	--	३९५
१०-६५	ग्राम कल्याणपुर भूमिवर्गीकरण	--	३९६
१०-६६	ग्राम कल्याणपुर की कुल सामान्य भूमि उपयोग	--	३९९
१०-६८	खरीफ शस्य में भूमि उपयोग	--	४०१
१०-६९	रबी मौसम में भूमि उपयोग	--	४०२
१०-७०	ग्राम कल्याणपुर में जनसंख्या एवं प्रतिव्यक्ति भूमि अनुपात	--	४०४
१०-७१	कुल कृषक परिवार एवं कृषित भूमि का अनुपात	--	४०६
१०-७२	ग्राम कल्याणपुर का खाद्य सन्तुलन पत्रक	--	४०७
११-१	औसत श्रम	--	४११
११-२	भूमि उपयोग-क्षमता	--	४१२
११-३	प्रति व्यक्ति भूमि एवं दैनिक कैलोरी	--	४१४
११-४	सन्तुलित आहार की संरचना	--	४१७
११-५	प्रति १००व्यक्तियों का मानव मूल्य(लम्बगुणांकों अनुसार)	--	४१८
११-६	जिले में खाद्यान्नों का उत्पादन	--	४१९
११-७	अभीष्ट वार्षिक खाद्य पदार्थ	--	४२०
११-८	सामान्य भूमि उपयोग में सम्भव परिवर्तन	--	४२४
११-९	बाणसागर परियोजना द्वारा सम्भावित सिंचाई क्षेत्र।	--	४२४

-: परिशिष्ट सूची :-

परिशिष्ट		पृष्ठ
सतना में विलीनीकृत भूतपूर्व पवाई एवं सनद रियासतें	—	४३७
सतना जिले के राजस्व निरीक्षक मण्डल	—	४३८
सतना केन्द्र के सामान्य जलवायु के आंकड़े (विगत३०वर्षीयपरआधारित)		४३९
सतना केन्द्र के जलवायु सम्बन्धी अन्य आंकड़े	--	४४०
सतना केन्द्र में वर्षा का वितरण (१९०१ से १९७३ तक)	--	४४२
रक्षित एवं सुरक्षित वन मण्डलों का क्षेत्रफल	—	४४४
सतना जिले के वन्य वृक्षों का वानस्पतिक नाम	—	४४७
सतना जिले के वनों के प्रकार एवं मण्डलवार क्षेत्रफल	—	४५४
सतना जिले के वनों से प्राप्त आय का विवरण(१९७१से१९७८)	—	४५८
सतना जिले के वन विभाग द्वारा निर्मित वन मार्गों एवं भवनों का विवरण	—	४६०
सतना जिले का फसली क्षेत्र एवं कृषि जन्य उत्पादन(१९७१)	—	४६२
सतना जिले का सामान्य भूमि-उपयोग(१९७१-७२)	—	४६३
सतना जिले के प्रमुख सड़क मार्ग	—	४६४
प्रमुख फसलों के वानस्पतिक नाम	--	४६५
सतना जिले के प्रमुख फसलों की उपज हजार मैट्रिक टनों में	—	४६६
सतना जिले का खरीफ शस्य प्रतिरूप(१९७१-७२)	--	४६७
सतना जिले का रबी शस्य प्रतिरूप (१९७१-७२)	--	४६९
सतना जिले का शस्य प्रतिरूप (१९७१-७२)	—	४७०
जिले के प्रतिदर्श ग्रामों का सामान्य भूमि उपयोग	—	४७२
प्रतिदर्श ग्रामों में प्रति व्यक्ति भूमि अनुपात	--	४७३

विषय तन्त्र :-

सामान्य परिचय :-

" The fundamental problem which faces the world today is the rapidely encreasing pressure of population on physical resources, particularly on resource of Land ".[1]

इस शताब्दी के मध्य में विश्व में ख्याति प्राप्त ब्रिटिश भूगोल वेत्ता प्रो० डडले स्टैम्प ने - भू-संसाधन की विशिष्टता की तरफ भूगोलवेत्ताओं ,अर्थशास्त्रियों, नियोजकों, शिक्षाविदों आदि का ध्यान आकृष्ट किया था। नि:सन्देह प्रकृति के विभिन्न संसाधनों में-भूसंसाधन का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका कारण सर्वथा स्पष्ट है, यह न केवल मानव के भोजन एवं आवास का स्रोत है अपितु अन्य समस्त जीवधारी इसमें निवास करते हैं। रायल कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार:-

" Land viewed differently by different persons .To the formers Land is the livelihood, to the urban citizens Land is the space to build his house, to the child Land is the playground ,to the humanist Land is the Soil, the materials which determine all forms of Biological life encluding human being, wild animals', birds, reptiles etc."[2]

इसके साथ अन्य संसाधन जल, वन ,खनिज आदि भू-संसाधन से घनिष्टत: सम्बद्ध है। विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओं का विकास उर्वर नदी घाटियों में हुआ, जहां से ये सभ्यतायें विश्व के विभिन्न भागों में पहुंची। आज भी विश्व के अधिकांश विकसित क्षेत्र समतल मैदान तथा नदी घाटियों में हैं। संसार की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या इन मैदानों में निवास करती है।

---

1. Stamp, L.D. (1960) Our developing world, Faber and Faber, 24 Russell square London p.1.

2. Roychaudhari, S.P. (1966) Land and soils, National Book trust, India, p.1.

किन्तु विगत तीन शताब्दियों में संसार के जनसंख्या की वृद्धि विगत दस हजार वर्षों की तुलना में अधिक द्रुत रही है। इस समय संसार में 3 महान आन्दोलन घटित हुये (अ) जनसंख्या का विस्फोट(ब) प्राविधिक औद्योगिक क्रान्ति (Technological & industrial revolution) (स) अत्यन्त भौतिक वादी जीवन स्तर । फलत: लोगों की आवश्यकताओं में असीम वृद्धि हुई । वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ यातायात एवं संचार के नवीन साधनों की खोज हुई । बीसवीं सदी, विशेषत: द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् भू-संसाधन की समस्या कठिन होती गई । भूमि के साथ समस्त प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक शोषण एवं उपयोग किया गया ।

इसके विपरीत विश्व का अधिकांश भू-भाग का अविकसित एवं उसका निर्धन बना रहा। यहां भू-संसाधनों का विदोहन नहीं हो सका।इन क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक साधनों का अभाव था। फलत: ये देश यथेष्ट आर्थिक विकास नहीं कर सके । समस्त अफ्रीका ,लैटिन अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया महाद्वीप ऐसे ही क्षेत्र थे । इन क्षेत्रों में यूरोपीय लोगों का साम्राज्य स्थापित हुआ। इनकी बढ़ती हुई आवश्यकताओं कीपूर्ति के प्रयत्न में भू-संसाधन का स्वार्थ साधन हेतु गलत एवं विनाशकारी शोषण हुआ। उदाहरणार्थ, गत तीन-चार शताब्दियों में समस्त संसार में करोड़ों हेक्टर भूमि के वनों को नष्ट कर दिया गया। फलत: भूमि क्षरण अत्यन्त तीव्र हो गया तथा केवल संयुक्त राज्य अमरीका में 300 करोड़ टन ठोस पदार्थों का जल एवं वायु द्वारा अपरदन हुआ है, और लगभग 8 करोड़ हेक्टर भूमि से कुछ मिट्टी या आधी परतअपरदित हो गई ।[1] यहां प्रश्न उठता है कि भू-संसाधन के बढ़ते हुये शोषण एवं जनसंख्या के द्रुत विकास के साथ क्या विश्व की भोजन कीउपलब्धि हो सकेगी ? क्या विश्व की आर्थिक प्रगति वर्तमान गति से चल सकेगी? आज विश्व के समृद्ध शाली कृषि प्रधान देश कनाडा संरा० अमरीका एवं रूस आदि भी खाद्यान्न के उत्पादन एवं निर्यात पर अनेक समस्यायें उत्पन्न कर रहे हैं।

---

1. Readings in Land utilisation (1957) The Indian Society of agricultural economics, Bombay.

भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिये भूमि उपयोग का अत्यधिक महत्व है। देश की ७७-४ प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। फिर भी खाद्यान्न के उत्पादन में देश आत्मनिर्भर नहीं है। इतना ही नहीं अपितु देश के ४० प्रतिशत लोगों के न्यूनतम् जीवन स्तर के लिये अभीष्टवस्तुओं की उपलब्धि नहीं हो रही है। आज भी भारत के समक्ष कुपोषण एवं अपर्याप्त पोषक तत्व की गम्भीर समस्या विचारणीय है।[1] विगत ३० वर्षो में देश की आबादी बढ़कर लगभग दुगनी हो गई है। यदि इसी गति सेजनसंख्या बढ़ती गई तो २००० ई० में एक अरब हो जायेगी। इसके अतिरिक्त जन संख्या को भोजन एवं वस्त्र ,आवास,स्वास्थ्य शिक्षा आदि सुविधायें प्रदान करना कठिन होगा। नगरीकरण में परिवहन के साधन एवं औद्योगिक वृद्धि एवं उनके विकास योजनाओं के विस्तार के फलस्वरूप कृषित भूमि के क्षेत्रफल में ह्रास हुआ है। फलत: प्रति व्यक्ति भूमि का अनुपात केवल ०-४५ हेक्टर रह गया है जो विश्व के अन्य देशों की तुलना में पर्याप्त कम है।

सारणी क्रमांक[2] -१

संसार के विभिन्न देशोंमें मानव भू-अनुपात

देश	प्रति व्यक्ति कृषि भूमि(एकड़ों में)
कैनाडा	४-०
स०रा० अमरिका	३-५
सोवियत रूस	२-८
डेनमार्क	१-६
फ्रान्स	१-२
ब्राजील	१-०
भारत	०-७५
ब्रिटेन	०-५५
जापान	०-२०

1. F.A.O.(1967) Agricultural commodiater,Profections for 1975 & 1985.

2. Stamp.L.D.(1970).Applied Geography,Penguin Books,London.

भूमि राष्ट्र की भौतिक सम्पत्ति है। इसका क्षेत्र निश्चित एवं सीमित होने के कारण अत्यन्त कीमती है। अतः सीमित क्षेत्र के उत्पादन वृद्धि हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधियों का प्रयोग परमावश्यक हो जाता है। प्रकृति ने भारत को एक समृद्ध देश बनाया है, किन्तु इन संसाधनों के सम्यक उपयोग हेतु अभीष्ट मानव प्रयास अपर्याप्त है। भारत जैसे निर्धन राष्ट्र के राष्ट्रीय नियोजन में भूमि को सर्व प्राथमिकता दी जानी चाहिये। समूचे राष्ट्र की आर्थिक प्रगति भूमि के समुचित उपयोग पर निर्भर है।

" Unless the food problems is handled Satisfactory economic canditions in the Country will not be stable enough to permit the implimentation of plan"[1]

किन्तु भारत जैसे देश का नियोजन सूक्ष्म प्रदेशों (Micro Regions) पर आधारित होना चाहिये। सामान्यतया देश अथवा प्रदेश के किसी योजना के क्रियान्वयन में लघु क्षेत्रों को छोड़ दिया जाता है। फलतः योजना का अभीष्ट फल प्राप्त नहीं हो पाता। अतः किसी क्षेत्र के नियोजन हेतु सूक्ष्म क्षेत्रों को सम्यक अध्ययन करने के पश्चात् ,योजनाओं का निर्माण होना चाहिये। भूगोलवेत्ताओं का कर्तव्य है कि देश के ऐसे सूक्ष्म क्षेत्रों का सुस्पष्ट चित्रण (clear picture) करके राष्ट्र के पुनर्निर्माण में योग-दान दें।

विगत पंचवर्षीय योजनाओं में भूमि संरक्षण एवं भूमि-उपयोग पर अत्यधिक बल प्रदान किया गया, किन्तु इसयोजना के अन्तर्गत अभी तक भी पूरे देश का कोई तकनीकी एवं वैज्ञानिक सर्वेक्षण नहीं किया गया। सामान्य भूमि सर्वेक्षण मण्डल (General soil conservation Board) द्वारा देश के नदी घाटियों के अपवाह क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया किन्तु इस सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़े कृषकों को उपलब्ध नहीं हैं।

अतः देश के भूगोलवेत्ताओं द्वारा ऐसे सूक्ष्म क्षेत्रों के भूमि-उपयोग का अध्ययन करके देश के प्रगति की नई दिशा प्रदान किया जा सकती है।

---

1. First Five year plan.Publication division, Govt.of India.p.68.

शोध में भूमि उपयोग का लक्ष्य :-

भौगोलिक रूप से 'भूमि' शब्द व्यापक अर्थों में व्यवहृत हुआ है। यहां भूमि शब्द के विभिन्न पक्ष-जल, स्थल एवं वायु हैं। अत: भूमि के निर्माण में मानवीय गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न वायुमण्डलीय प्रतिकारक भी प्रभावशील होते हैं।

भूमि उपयोग का अर्थ उसके उपयोग में कंजूसी, अथवा कुछ विशिष्ट कार्यों हेतु सीमित करना नहीं, अपितु भूमि संसाधन का अधिकाधिक लोगों की अनुकूलतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अधिकाधिक समय तक, अधिकाधिक उपयोग है। भूमि के सुनियोजित उपयोग का अर्थ उसकी विनष्ट होने से बचाना, वर्तमान भूमि उपयोग की त्रुटियों एवं दोषों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुये दूर करना तथा उसका पुनर्स्थापन (Restoration) करने का प्रयास है।[1]

सामान्यतया किसी क्षेत्र विशेष का भूमि उपयोग 3 तत्वों द्वारा प्रभावित होता है। (अ) भौतिक (ब) आर्थिक तथा (स) सामाजिक एवं राजनैतिक तत्व। भौतिक तत्वों में भूमि की उर्वराशक्ति सम्मिलित रहता तथा आर्थिक तत्वों में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, सिंचाई की सुविधा, परिवहन के साधनों की उपलब्धियां महत्वपूर्ण तत्व हैं। इसके साथ ही सामाजिक एवं परम्परात्मक तत्व भी प्रभावशील होते हैं। भारत में वैदिक काल से ही सामाजिक एवं आर्थिक तत्व ग्रामीण भूमि उपयोग को प्रभावित करते रहे हैं।[2]

अनियोजित ढंग से भूमि का उपयोग करने से भूमि की उर्वरता का ह्रास होने लगता है, तथा उसमें भौतिक, रासायनिक एवं जैविक विकार उत्पन्न हो जाता है। भूमि उपयोग नियोजन का मूलतत्व भूमि उपयोग एवं भूमि की उत्पादन शक्ति का सामान्जस्य करना है। इसके अन्तर्गत भूमि के विभिन्न आवश्यक उपयोगों जैसे- वन, कृषि, कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में भूमि

1- Chatterjee, S.P.(1954) 'Land use sarvey in India,' Procedings of International Georaphical seminar, Aligarh, p.99.

2. Shafi M.(1966) 'Technique of rural Landuse planning withereference to India.' The Geographer, A.M.University, Aligarh.

उपयोग आदि का समुचित आवंटन सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र की भांति लघु क्षेत्रों(Microregions) का सम्यक अध्ययन करने के पश्चात् इसके अभीष्टतम उपयोग हेतु योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिये । भूमि उपयोग की योजना, रचनात्मक, सुझावात्मक, व्यापक एवं विश्लेषणात्मक होनी चाहिये ।

भूमि उपयोग शोधकर्ताओं का प्रमुख लक्ष्य उपलब्ध जानकारी का समुचित उपयोग तथा कुछ ऐसी अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है जो किसी क्षेत्र में भूमि उपयोग अध्ययन हेतु दीर्घ काल तक प्रयुक्त की सकें।

भूमि उपयोग की भौगोलिक अवधारणा:- (Geographical concept inLand Utilization).

भूमि उपयोग एवं भूगोलवेत्ता में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। एक भूगोलवेत्ता भूमि तथा उसके विभिन्न योगों की विभिन्न पहलुओं से अध्ययन करता है, जैसे भूविज्ञान उच्चावच, मिट्टी, जलवायु सामाजिक मनोवैज्ञानिकता, अर्थशास्त्रीय सांख्यकीय, इतिहास, तकनीकी एवं अभियांत्रिकी इत्यादि। इसके साथ ही वह उनकी समस्याओं को ध्यानाकृष्ट करता है। इसके अतिरिक्त भूगोलवेत्ता विभिन्न असम्बद्ध भौतिक एवं मानवीय तत्वों को भूमि उपयोग मानचित्रों के माध्यम से सम्बद्ध करता है अतः भूगोलवेत्ताओं द्वारा उपलब्ध परिणाम भूमि उपयोग के सम्यक अध्ययन सहायक होते हैं।

अतः भूमि उपयोग के विश्लेषण के लिये भौगोलिक तत्वों का अभीष्ट अध्ययन, एवं उनकी पृष्ठभूमि परिप्रेक्ष्य होना परमोपयोगी होता है। वस्तुतः भूमि उपयोग क्षेत्रीयकरण का एक अनुशासित अध्ययन है, जिसमें स्थानिक सम्बन्धों की व्याख्या आवश्यक है। इस अध्ययन का उद्देश्य नियोजन की प्रक्रियाओं के क्रियान्वयन हेतु जानकारी होता है। इस अध्ययन से भावी भूमि उपयोग की सार्थकता पर प्रकाश आता है, और एक दिशा प्रदान की जाती है। इस अध्ययन की सार्थकता वर्तमान भूमि उपयोग पर ही सम्भव है। इसका उद्देश्य पारिस्थितिक प्रभाव विवेचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत

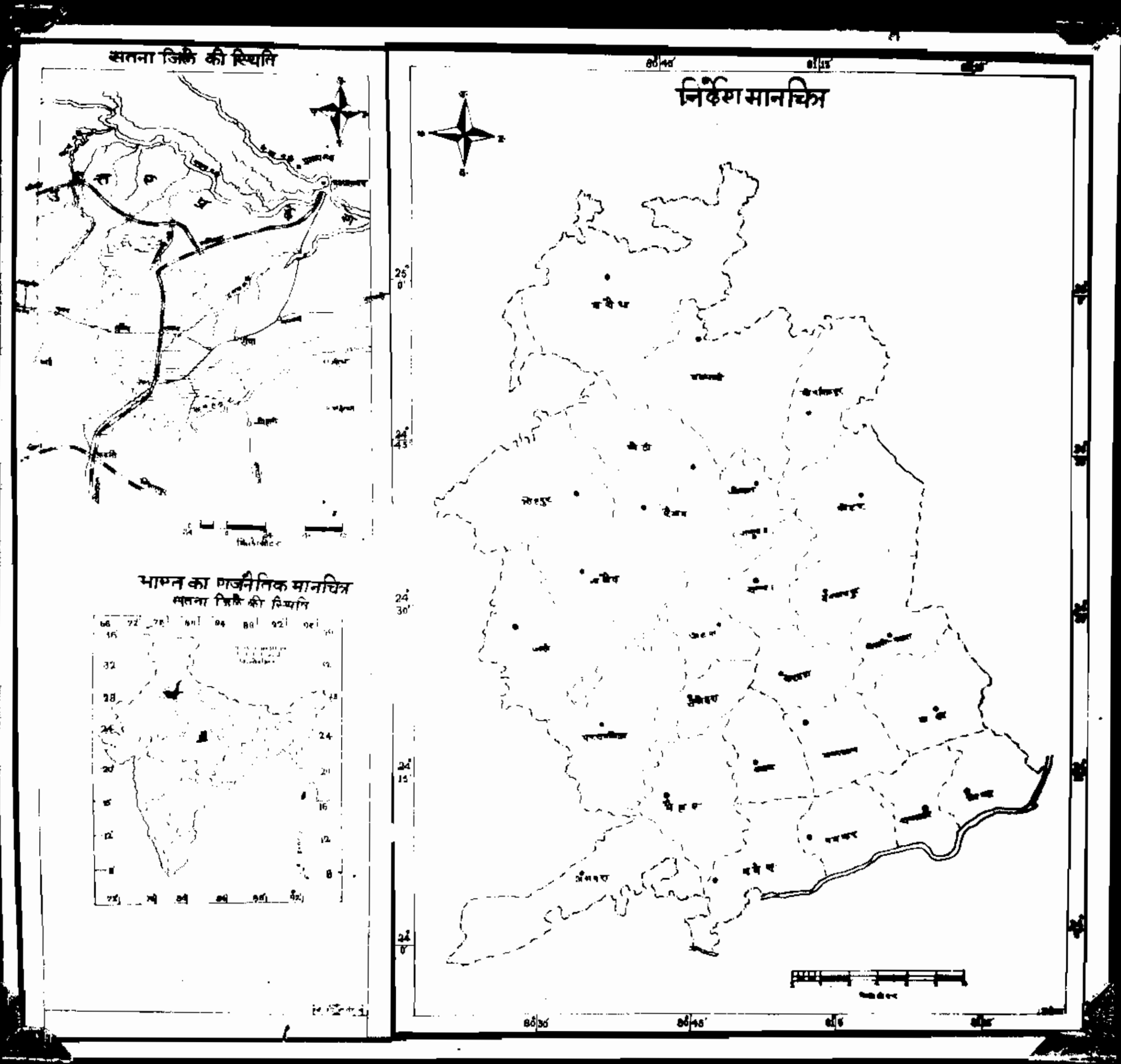

चित्र-1

SOURCE (A) PHYSICAL PLATE OF INDIA, NAGPUR [illegible]

NATIONAL ATLAS ORGANIZATION, CALCUTTA [illegible]

(B) [illegible]

करना है। इसके साथ ही भूमि के विशिष्ट उपयोगों की भावी क्षमता को इंगित करना इस अध्ययन का मूल उद्देश्य होता है।

इस दिशा में भारतीय भूगोलवेत्ताओं का ध्यान द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान (सन् १९४०) "भारतीय विज्ञान सम्मेलन" में डा०एस०पी० चटर्जी ने आकृष्ट किया तथा विश्व भूमि उपयोग आयोग के सुझावानुसार उनकी अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति बनी। तदनन्तर, डा० एल०एस०राव, प्रो० मुहम्मद शफी, डा० इ०अहमद आदि प्रमुख भूगोलवेत्ताओं ने इस दिशा में कार्य किया। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक भूगोलवेत्ता देश के विभिन्न भाग में का या तो अध्ययन किये हैं, अथवा कर रहे हैं। किन्तु देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कृषि तथा उपयोग अध्ययन विधि में पर्याप्त असमानतायें मिलती हैं।

क्षेत्र का चुनाव:-

चित्र संख्या १ में शोध कार्य हेतु चयन किया हुआ क्षेत्र ' सतना जिले ' का मानचित्र दर्शाया गया है। लेखक ने निम्न कारणों से यहां के भूमि उपयोग के अध्ययन में अभिरुचि प्रकट किया ।

(१) प्रथमतः सतना जिला यद्यपि एक प्रशासकीय क्षेत्र है, तथापि यह एक भौगोलिक इकाई भी है। सम्पूर्ण जिला विन्ध्यन उच्च भूमि के अन्तर्गत रीवा पठार का पृथक्स्थ क्षेत्र है। इस जिले के अन्तर्गत स्थित कुल ११ देशी एवं सनद रियासतें होते हुये भी यहां की सांस्कृतिक भाषा एवं इतिहास लगभग एक समान है।

(२) इसके साथ ही सम्पूर्ण जिला एक संक्रमण मेखला(Transitionalzone) का उत्तम उदाहरण है। इसका उत्तरी भाग गंगा-यमुना के मैदानी क्षेत्र के अन्तर्गत है। यहां की औसत ऊंचाई केवल २५० मीटर है। दक्षिणी भाग दक्कन के प्राचीन पठार का अंश है। यह मुख्यतः नर्मदा एवं सोन नदी अपवाह तंत्र के अन्तर्गत निहित है। पश्चिमी भाग पन्ना एवं परसमनियां पठार(माण्डेर पठार) से आबद्ध है। जिले के मध्य भाग में टमस नदी की गहरी घाटी है। फलतः यह उत्तरी मैदान एवं दक्षिणी पठार के मध्य एक संक्रमण क्षेत्र है। जलवायु की दृष्टि से भी यह जिला बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागरीय

क्षेत्रों के मध्य संक्रमण क्षेत्र है। अत: बघेला में विशेषतायें मिलती हैं।

३- सतना जिले के अन्तर्गत अनेक प्रकार की भौतिक विषमताओं के फलस्वरूप यहां के भूमि उपयोग में पर्याप्त असमानतायें एवं विशिष्टतायें सम्मिलित हैं।

४- लेखक रीवा एवं सतना जिलों का मूल निवासी है। अत: उसने रीवा एवं सतना दोनों जिले की कृषि एवं भूमि उपयोग प्रारूप को बाल्यकाल से पूर्ण रूपेण देखा है, तथा इससे सम्बन्धित समस्याओं से घनिष्ट रूप से अवगत है। जिले की ७३-० प्रतिशत जनता कृषि कार्य में संलग्न है। यहां का कृषक वर्ग भर परिश्रम करता है, फिर भी यह प्रदेश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में से है। यद्यपि सतना जिले को मध्य प्रदेश का उत्तर-पूर्वी द्वार कहते हैं, किन्तु जैसे ही गंगा के मैदान से इस पठारी क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, एक अनाकर्षक एवं दयनीय दृश्य प्रस्तुत होता है। लोगों के रहन-सहन का स्तर गिरा हुआ है। प्रति व्यक्ति दैनिक व मासिक आय कम है। इस पिछड़ी हुई स्थिति के लिये कई भौगोलिक तत्व उत्तरदायी हैं।

इस क्षेत्र में सिंचाई का अभाव व निर्धनता आदि समस्यायें हैं। कृषि की पिछड़ी हुई अवस्था है। कृषि जिले की विपुल भौगोलिक सम्पदा अथवा भूमि व्यवस्था की द्योतक है। जिले की वर्तमान ग्रामीण अधोगति का मूलकारण भूमि और मनुष्य के सम्बन्ध का असन्तुलन है। भू संसाधन (Land Resource) का सम्यक उपयोग करके जिले की आर्थिक प्रगति हो सकती है।

५- अन्त में लेखक की भूगोल में " भूमि उपयोग " शाखा से विशिष्ट शैक्षणिक अभिरुचि है। भारत जैसे विकासशील कृषि प्रधान राष्ट्र के स्वावलम्बन हेतु भूमि सम्पदा का सम्यक उपयोग नितान्त आवश्यक है। फलत: लेखक का उद्देश्य प्रदेश के इस उपेक्षित क्षेत्र के भूमि उपयोग के सम्बन्ध में मूल योगदान प्रस्तुत करना है।

स्थिति,सीमा एवं विस्तार:-

सतना जिला विन्ध्यन उच्च भूमि के अन्तर्गत रीवा पठार का पश्चिमी भू-भाग है। प्रशासकीय दृष्टि से यह मध्य प्रदेश के रीवा संभाग का एक प्रमुख जिला है , जो २ अप्रैल १९४८ को मूल पूर्व रीवा राज्य तथा १० अन्य छोटी एवं सनद रियासतों को मिलाकर बनाया गया है।

जिले का विस्तार २३° ५८' तक उत्तरी अक्षांश से २५° १२' उत्तरी अक्षांश तक तथा ८०° २१' पूर्वी देशान्तर से ८१° २३' पूर्वी देशान्तर तक है।[1] इसकी उत्तर दक्षिण लम्बाई १३५ कि०मी० तथा पूर्व पश्चिम चौड़ाई ८४ कि० मी० है जो सम्पूर्ण मध्यप्रदेश का १-६८ प्रतिशत है। इस प्रकार इसका आकार प्रसिद्ध औद्योगिक देश ग्रेट ब्रिटेन से पर्याप्त साम्य रखता है।

सतना जिले की उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी सीमायें प्राय: प्रशासकीय हैं, किन्तु दक्षिण में सोन तथा उसकी सहायक महानदी लगभग ११० कि०मी० लम्बी सीमा निर्धारित करती है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बांदा जिला (मानिकपुर तहसील) स्थित है। इसके पूर्व में रीवा जिले की सिरमौर तथा हुजूर तहसीलें तथा सीधी जिले की गोपद बनास तहसीलें हैं । जिले की पश्चिमी सीमा पन्ना जिले के अजयगढ़ ,पन्ना तथा पवई तहसीलों से परिबद्ध है। इसके दक्षिण में जबलपुर जिले की मुड़वारा तथा शहडोल जिले की बान्धवगढ़ एवं ब्यौहारी तहसीलें स्थित हैं ।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि:-

सतना जिले के इतिहास वस्तुत: बाघेलखण्ड क्षेत्र के इतिहास से घनिष्ट रूप से सम्बद्ध है, क्योंकि जिले का अधिकांश भू-भाग (अमरपाटन तथा उत्तरी रघुराजनगर तहसीलें)तत्कालीन रीवा-राज्य के बाघेलवंश द्वारा शासित होतारहा है। इसके अतिरिक्त उस समय यहां कई प्रमुख छोटी रियासतें एवं सनद रियासतें थीं(परिशिष्टिका क्रमांक १-१)इनमें मैहर, नागौद,

---

1.National survey of India',Topographical sheet No.63,C.D.& H.

कोठी, सोहावल बसी तथा बरौंधा प्रमुख रियासतें थीं। इनके अलावा पालदेव पथराटारी, भैसुन्धा तथा कामता रजौला पांच चौबे जागीरें थीं।[१]

इस क्षेत्र में बाघेलखण्ड राजपूतों का इतिहास यथाप्त आकर्षक एवं पुराना है लगभग 400 वर्षों तक यहां शासन करते रहे।

किन्तु इसके पूर्व भी प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों (ईसा के जन्म से पूर्व) एवं साहित्यिक लेखों में इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है। रामायण एवं महाभारत काल में यह देश तात्कालीन कौशल प्रान्त से एक स्वतंत्र राजनैतिक इकाई का भाग था। इसके पश्चात् यहां नाग, वटाटक, हैहय, चेदि अथवा कलचुरी, सेंगर आदि वंशों में हजारों वर्षों तक शासन किया।[2] ईसा से पूर्व तीसरी एवं दूसरी शताब्दी में यह क्षेत्र शुंगवंश के शासकों के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण क्षेत्र समझा जाता था।[3] इस वंश के शासक यद्यपि मूलरूप से नर्मदा के किनारे शासन करते थे, जिनकी राजधानी माहिष्मती थी, (जिसे आजकल पश्चिमी निमाड़ में स्थित माहेश्वर नगर कहा जाता है) यहां से इस वंश के लोगों ने पूर्व की ओर बढ़ना शुरू किया, तथा कालान्तर में ऐतिहासिक कालिन्जर दुर्ग को प्राप्त कर लिया। आजकल यह दुर्ग सतना जिले की उत्तरी सीमा से केवल ६ किलो मी० दूर उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में स्थित है। इन शुंग वंशीय लोगों ने कालिन्जर दुर्ग को अपना प्रमुख आधार बनाकर सम्पूर्ण आधुनिक (बाघेलखण्ड) क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया। महान साम्राट अशोक (ईसा से ३२० वर्ष पूर्व) के समय यह क्षेत्र बौद्ध धर्म का एक उल्लेखनीय क्षेत्र रहा है। इस समय गाँव ही राज्य की आर्थिक आय के आधार पर थे जिनकी सम्पन्नता कृषि एवं पशुधन पर निर्भर थी।[4] प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ भरहुत इसी जिले की नागौद तहसील में स्थित है। नागौद नगर बस्ती से भरहुत की दूरी १३ कि०मी० तथा सतना से १५ कि०मी० है। यहां का प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप सम्राट अशोक द्वारा स्थापित

---

१. सनद रियासतें -बरौंधा, कामता, रजौला, पथार-कछार, भैसुन्धा तथा चौबे जागीरें।

२ - दरबेश वाघरी- ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ १९६६ पृष्ठ१८६-८७।

3- Archeological Survey of India report, vol.21p.82 Epigraphic p.330.

4. Indian Antiquity vol.21.p.225.

कराया गया था। भरहुत सम्भवत: बौद्ध एवं उज्जैयनी मार्ग का एक प्रमुख विश्राम स्थल था। यद्यपि तात्कालीन भूमि उपयोग का कोई मापक विवरण प्राप्त नहीं है, तथापि कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज की अधिकांश जनता कृषि व पशुपालन पर निर्भर थी।

तदनन्तर चतुर्थ एवं पंचम् शताब्दी में यहां मगध के गुप्त साम्राज्य का आधिपत्य रहा। इसका विवरण उच्चकल्प (Uchchakalpa) आधुनिक उचेहरा (नागौद, तहसील, जिला सतना) के सामन्त शासकों एवं खो (Kho) के परिव्राजक राजाओं (Parivrajak Rajas of Kho) (नागौद तहसील) के अभिलेखों से मिलता है।[1] इस समय नागौद खो, उचेहरा तथा भरहुत एवं उसके समीपस्थ क्षेत्र सम्भवत: काफी विकसित क्षेत्र थे। इनके भग्नावशेष इस क्षेत्र में आज भी दृष्टव्य हैं।

गुप्त साम्राज्य के पश्चात् (पंचम से दशम् शताब्दी तक) यहां कलचुरियों अथवा चेदि वंश का अभ्युदय हुआ। इनका भी मुख्य गढ़ कालिन्जर था तथा यहां के चेदि शासकों की गौरव पूर्ण उपाधि कालिन्जराधिश्वर (Lord of Kalinger) कालिन्जर के स्वामी थी। इस समय तक यहां की अर्थव्यवस्था के सुधार तथा कृषि आदि के विकास के लिये किये गये प्रयासों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसी समय चन्देल राजा यशोवर्मन (सन् ९२५-५५) ने कालिन्जर दुर्ग तथा समीपस्थ क्षेत्रों को विजित कर लिया। यद्यपि कलचुरी उस समय भी यहां एक शक्तिशाली वंश के रूप में ग्यारहवीं सदी तक इस क्षेत्र में अपना आधिपत्य बनाये रहे।[2]

इस प्रकार सहस्त्रों वर्षों की अवधि में अनेक राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उलट-फेर हुये और तदनुरूप भूमि के स्वामित्व एवं उसके उपयोग में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहे। तदनन्तर इस क्षेत्र के इतिहास में बाघेल राजपूतों का प्रवेश होता है। बाघेल गुजरात प्रान्त के सोलंकी वंश के

---

1. LUARD, C.E. Imperial Gazetteer of India, vol. vi, Calcutta, 1908 P. 187.

2. IBID - " " " P. 188

Documentation Centre (I.C.S.S.R.) Acc. No. 11081 Date 16.6.78 New Delhi

TS 300

राजपूत थे, जिन्होंने गुजरात में पहले से तेरहवीं शताब्दी तक शासन किया था।[1] इस वंश के एक शासक व्याघ्रदेव थे जो वीरधवल (१२१९-१२६० ई०) के पुत्र थे। रेणीठवाला की (गीठा का पेड़) यात्रा में उत्तरी भारत आये हुये थे, तथा कालिन्जर से २७ कि०मी० उ० ३० पूर्व में स्थित मड़फा दुर्ग-(Mupha Fort) में अपना अधिकार कर लिया।[2] कालान्तर में इन्होंने अपने साम्राज्य का काफी विस्तार किया। उनके पुत्र कर्णदेव का ब्याह मण्डलों के कलचुरी (हैहय) राजा की राजकुमारी से हुआ तथा तथा बान्धवगढ़ दुर्ग (२३° ४०' उत्तर तथा ८१° ३ पूर्व)(जो आजकल शहडोल जिले के बान्धवगढ़ तहसील में स्थित है) दहेज स्वरूप मिला। यह स्थान सन् १५६० ई० तक बाघेल राजपूतों की राजधानी रहा।[3] यह यवनों का काल था। सन् १४९८-९९ में दिल्ली सल्तनत सिकन्दर लोदी ने बान्धवगढ़ दुर्ग को जीतने का असफल प्रयास किया। किन्तु बाद में १५९७ ई० में मुगल साम्राट अकबर द्वारा बांधवगढ़ दुर्ग नष्ट करवा दिया गया। फलतः सन् १६१६ ई० में बाघेला राजा विक्रमादित्य (सन् १५८७-१६२४) में अपनी राजधानी बान्धवगढ़ में से स्थानान्तरित कर रीवा नगर में स्थापित किया।

आंग्लकाल:-

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहां अंग्रेजों का प्रभुत्व फैलने लगा और १८१२ में कालिन्जर किला इनके हाथ आया। शेष भाग भी धीरे-धीरे इनके अधीन होता गया।[4] कालान्तर में यह समस्त क्षेत्र बाघेलखण्ड एजेन्सी के अन्तर्गत हो गया। इस काल में भूमि कर को ठेके के माध्यम से वसूल करने का प्रचलन शुरू हुआ। फलस्वरूप जमीन्दार एवं इलाकेदारों के अतिरिक्त महाजन और पूंजीपति भी ठेकेदार बन बैठे। यह भया वर्ग न तो भूमि में

---

1. Luard C.E. Imperial Gazetteer of India, vol.xvi, Calcutta, 1908 p.281.
2. Luard C.E. Rewa State Gazetteer, Calcutta 1907.p.95.
3. Third .. .. .. P. 97
4. Imperial Gazetteer of India(1908)part IX pp.71.72.

श्रद्धा रखता था और न किसानों से सहानुभूति । वह अधिक से अधिक पैसा वसूल करने का साधन अपनाता था । लगान की वसूली तलवार की नोंक और बन्दूक की गरज पर हुआ करती थी। शासक और अराजकता का प्रतिकात्मक " नवाबी " शब्द आज भी बघेलखण्ड में प्रयोग होता है। कर्नल स्लीमैन ने तात्कालीन अवध प्रान्त के ग्रामों का अति मर्मस्पर्शी चित्रण किया है । [१]

सन् १८५७ की क्रान्ति के समय यह क्षेत्र कई देशी रियासतों में विभक्त था। देश के अन्य भागों की भांति यहां भी मैहर,सोहावल तथा अमरपाटन आदि स्थानों पर विद्रोह भड़क उठा था। किन्तु रीवा रियासत के तात्कालीन महाराजा रघुराज सिंह ने क्रान्ति को सैनिक बल द्वारा पूर्णत: दबा दिया।

क्रान्ति के बाद जन कल्याण के कई झूठे आश्वासन दिये गये तथा कर्नल बिलाबी आसबोन(Colonal Bilabi Ashbow)नामक पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया गया। किन्तु इसके विपरीत इलाकेदारों की सेवा के लिये भूमि अधिकार की सनद देदी गई। सदियों से व गरीबी के चक्र में फंसा किसान और गहरे फंसगया। भूमि कर में वृद्धि तथा भूमि से बेदखली किये जाने की विभीषिकाएं और विकराल हो गई।,कर्नल लुआर्ड [२] के अनुसार :-

" इससमय लोगों की आर्थिक स्थित बहुत पिछड़ी थी। शिक्षा , स्वास्थ्य ,परिवहन, आदि की कोई सुविधा नहीं थी, भूमि सुधार व कृषि के विकास की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। गरीबी,एवं महामारियों का प्रकोप था अकाल ,भुखमरी ,में कोदी ,मक्का तथा ज्वार लोगों का मुख्य भोजन था। "

तात्पर्य यह कि सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था ध्वस्त थी। जिले के उत्तरी एवं पश्चिमी भाग में स्थित ,मैहर, नागौद, सोहावल,कोठी,

---

1. Sliman Journey through oudh. part II pp.206.7.
2. Lurad,C.(1907) central Indian State Gazetterp.36.

रियासतें एवं छोटी जागीरें समय-समय पर बुन्देल खण्ड के शासकों द्वारा आक्रान्त होती रही है। अतः इस अवधि में यहां भी आर्थिक एवं राजनैतिक उथल-पुथल बनी रही और भूमि विकास एवं कृषि की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। गरीबी के कारण गेहूं तथा अच्छी किस्म के चावल किसान के लिये खाद्य की अपेक्षा मुद्रादायिनी धान्य माने जाते थे।

नागौद रियासत के शासक परिहार राजपूत थे, जो राजस्थान के माउण्ट आबू से यहां आये थे। सातवीं शताब्दी में इस वंश के लोगों ने गहरवार शासकों को भगाकर मझौली तथा मऊ के बीच अपना साम्राज्य स्थापित किया। इन लोगों ने प्रारम्भ में उचेहरा (२४°२२' उ० तथा ८०°४८' पूर्व) को अपनी राजधानी बनाया। कालान्तर में इस रियासत का अधिकांश भू-भाग बुन्देला एवं बाघेला राजाओं ने हस्तगत कर लिया।[1]

ब्रिटिश काल में जिले का दक्षिण पश्चिम भाग मैहर रियासत के अन्तर्गत था। यहां के शासक कछवाहा राजपूत वंश के थे, जो १७ और १८ वीं शताब्दी में राजस्थान के अलवर जिले से आये थे। तात्कालीन ओरछा नरेश ने इन लोगों को बसाया था। इस वंश में सन् १७७० में राजा बेनी सिंह एक सुयोग्य एवं बहादुर शासक हुआ। इन्होंने अनेक तालाबों एवं भवनों का निर्माण कराया था। प्रजा की सुविधा के लिये सड़कें बनवायीं तथा एक स्वतंत्र रियासत की स्थापना किया।[2]

इसी प्रकार कोठी एवं सोहावल जैसी समावर्ती रियासतें (जो अब रघुराजनगर तहसील के अन्तर्गत हैं) भी बाघेलों एवं बुन्देलों के आक्रमण की शिकार होती रही। आंग्ल काल में कोठी, पन्ना रियासत का ही अंग रहा। तदनन्तर बांदा के अलीबहादुरनवाब ने इसे एक स्वतंत्र रियासत का स्वरूप प्रदान किया।

सोहावल राज्य प्रारम्भ में विस्तार बिरसिंहपुर, तथा कोठी आदि पड़ोसी क्षेत्रों तक था, किन्तु कालान्तर में यह घट कर केवल ३३५

---

1. Luard,C.E.(1807) centralIndian State Gazetteer,p.56.
2. Ibid. P.71.

वर्ग कि०मी० की एक छोटी सी सनद रियासत के रूप में शेष रह गई।इसका अधिकांश भाग विषम धरातल युक्त तथा पर्वतीय है।

जिले का धुर उत्तरी भाग-बरौंधा सनद रियासत के अन्तर्गत था। इसका विस्तार केवल ३२७ वर्ग कि०मी० था, जो उ०प्र० के बांदा जिले तक फैला था। यह विन्ध्य पहाड़ व पन्ना पहाड़ियों के मध्य विस्तृत था। अतः इसे पथार -कछार भी कहा जाता है। यहां के शासक रामस्थान के रघुवंशी राजपूत थे।

इसके अतिरिक्त बरौंधा सनद रियासत एवं बांदा जिले के मध्य ५ छोटी-छोटी अन्य सनद रियासतें थीं। इन्हें चौबे जगीरें (ChaubeJagirs) कहा जाता था। ये रियासतें थीं- पालदेव -नयगांव, तरौं, भैसुन्धा तथा कामता रजौला। इनका कुल क्षेत्रफल ३२४ वर्ग कि०मी० था। इन सनद रियासतों के शासक जिझौतिया ब्राह्मण थे। ये बहुत बहादुर थे, तथा पन्ना महाराज छत्रसाल की सेना में उच्च सैनिक अधिकारी थे।

किन्तु भूमि व्यवस्था के विगत एक सहस्त्र वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस अवधि में उपयुक्त शासकों जागीरदारों किसानों तीनों में से किसी ने भूमि सुधार प्रति कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं किया। चाहे मुगल साम्राज्य या अंग्रेज साम्राज्य रहा हो। जमींदार और इलाकेदार अपनी आय बढ़ाते रहे और किसीप्रकार अपने दिन काटते रहे। अतः भूमि उपयोग असंगत होता गया और भूमि विकास के समस्त नैसर्गिक कार्यों कोविघटन होता रहा। अपरदन, उर्वराक्षरण एवं ऊसर के रोग बढ़ते गये। तात्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था के अनुसार सामाजिक भेदभाव को प्रभावित करते हुये जातीय आधार पर ऊंची -जातियों (ब्राह्मण-क्षत्रिय) की अपेक्षा नीची-जातियों से कर अधिक लिया जाता था। फलस्वरूप कृषि संगठन का ढांचा शिथिल बना रहा। इस समय देशी रियासतों के शासक प्रायः आक्रमण एवं युद्ध की विभीषिका से ग्रस्त रहते थे। इनकी प्रशासकीय सेवाएं बहुत ही सीमित थीं। फलतः व्यापक स्तर पर सम्पूर्ण जिले के उपयोग का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया गया। विगत शताब्दी में अनेकबार अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि (परिशिष्ट क

क्रमांक ५) का प्रकोप हुआ। कृषकों की अशिक्षा ,रूढ़िवादिता थी। फलत: भू संसाधन जैसी मूल्यवान सम्पदा नष्ट होती रही।

स्वातंत्र्योत्तर काल:-

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् यद्यपि भूमि एवं कृषि से सम्बन्धित कई नवीन विभागों की स्थापना की गई। सदियों पुरानी जमींदारी व इलाकेदारी प्रथा का अन्त हुआ। राज्य सरकार के निर्देशन में कृषि विभाग, भू संरक्षण एवं भूमि- परीक्षण तथा सामुदायिक विकास खण्डों आदि की स्थापना की गई। इसी के साथ ही १ अप्रैल १९४८ को सतना जिला भूत-पूर्व विन्ध्य प्रदेश में सम्मिलित कर दिया गया जो कालान्तर (१नवम्बर।१९५६) में पुन: मध्य प्रदेश में विलीन हो गया। आजकल सतना, मध्य प्रदेश के ४५ जिलों में से एक जिला है। इसके अन्तर्गत ४ तहसीलें ,२७ राजस्व निरीक्षक मण्डल तथा २११६ ग्राम स्थित हैं।(चित्र क्रमांक १)

यद्यपि इस समय उपयोग एवं भूमि सुधार से सम्बद्ध कई नये कदम उठाये गये फिर भी कतिपय त्रुटियों के फलस्वरूप आज भी इससे सम्बद्ध अनेक समस्यायें हैं। भूमि उपयोग के विभिन्न प्रारूपों का अध्ययन केवल मात्र राजस्व वसूली में ध्यानाकर्षित कर किया जाता है। सम्बद्ध कार्यालयों में भूमि उपयोग से सम्बन्धित आंकड़े उपलब्ध हैं, फिर भी आंकड़ों के संकलन की विधि दोष पूर्ण है। प्रथमत: इनके संकलन -कर्ता परम्परागत रूप से अल्प शिक्षित पटवारी होते हैं। इनमें अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिक कृषि तकनीक से प्राय: अनभिज्ञ होते हैं। अतएव आंकड़ों का संकलन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं अपितु रूढ़िवादी ढंग से किया जाता है। दूसरे, इन उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार कार्यालयों से बाहर व्यावहारिक रूप से कृषि क्षेत्र में कदम नहीं उठाये गये हैं। तीसरे, भूमि का यथेष्ट वैज्ञानिक सर्वेक्षण नहीं हुआ है। फलत: जिले की कृषि व्यवस्था के सम्यक विकास हेतु पहला कदम भूमि उपयोग की यथेष्ट जानकारी अभीष्ट होगी।

आंकड़ो के स्रोत :-

लेखक की जिले के भूमि उपयोग के अध्ययन में विभिन्न पहलुओं के लिये विभिन्न कार्यालयों से आंकड़ो एवं अन्य सूचनायें प्राप्त हुई। ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि एवं जिले के महत्व के विषय में रीवा राज्य गजेटियर (Rewa state Gazetteer)एक उत्तम स्रोत था। भौतिक धरातल एवं अपवाह तंत्र के लिये भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित स्थलाकृतिक मान-चित्र (Topographical Sheets)विशेष उपयोगी थी। जलवायु एवं भूभौतिकी के विषय में सहायक संचालक मौसम वेधशाला विभाग पूना द्वारा प्राप्त बुलेटिन से जानकारी प्राप्त हुई। इसी प्रकार भूविज्ञान के विषय में भारत का भूविज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological survey of India) विभाग, वनस्पति के लिये मुख्य वन संरक्षक म०प्र० भोपाल एवं संभागीय वन संरक्षक रीवा से उपयोगी आकड़े प्राप्त हुये जिले की मृदाओं के सम्बन्ध में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय ,जबलपुर तथा भूमि परीक्षण अनुसंधान शाला(Soil testing contes)भोगांव से सूचनायें प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त संचालक कृषि विभाग सतना से भी कुछ जानकारी उपलब्ध हुई। सिंचाई विभाग से जिले में संचालित सिंचाई योजनाओं के बारे में सूचनायें प्राप्त हुई। भूमिगत जल के बारे में नल-कूप विभाग,सतना, विशेष उपयोगी था। इसके अतिरिक्त बाढ़,अकाल, सूखे, तथा जनसंख्या के वितरण व अधिवासों के बारे मेंभारतीय सेन्सस पुस्तिका एक उत्तम स्रोत थी।

जिले के भूमि उपयोग के विषय मेंसर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचनायें:- भूअभिलेख कार्यालय(Office of Land records) सतना एवं संचालनालय भू अभिलेख ग्वालियर से उपलब्ध हुई। कृषि तकनीक, शस्यवितरण, शस्य प्रतिरूप(Cropping pattern) एवं शस्य संयोजन क्षेत्र(Crop-Combination. REGION) के विषय में अभीष्ट आकड़े कृषि विभाग, सामुदायिक विकास खण्डों भू अभिलेख कार्यालय सतना से प्राप्त हुआ।

नगरीय भूमि उपयोग से सम्बन्धित अभीष्ट सूचनायें मुख्य नगर पालिका अधिकारी,सतना ,मैहर,नागौद, एवं उचेहरा, से प्राप्त हुई। इसके साथ ही साथ जिला सतना नजूल विभाग से भी सूचनायें उपलब्ध हुई।

इनके अतिरिक्त मुख्य जिला पुस्तकालय,सतना, नागौद तथा मैहर मीपर्याप्त उपयोगी रहे। नागौद पुस्तकालय इनमें सर्वाधिक सम्पन्न एवं उपयोगी पुस्तकालय था। इनके साथ ही विन्ध्य प्रदेश पुस्तकालय (वर्तमान व्यंकट विद्या सदन) रीवा, विधान सभा पुस्तकालय भोपाल,सचिवालय एवं गजेटियर पुस्तकालय भोपाल ,जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय सागर,तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली इत्यादि संस्थाओं से भी अनेक उपयोगी सूचनायें उपलब्ध हुई।

राष्ट्रीय भारतीय ऐटलस कलकत्ता द्वारा प्रकाशित भूमि उपयोग प्लेट (Landuse plates) भी सर्वथा उपयोगी सिद्ध हुई है।

शोध कार्य का आयोजन :- (Plan of the work)

सतना जिले की भूमि उपयोग सम्बन्धी शोधकार्य तीन प्रमुख खण्डों में विभक्त है।

(अ) भौतिक संरचना एवं उच्चावच- इसके अन्तर्गत पांच प्रमुख अध्याय है। प्रथम अध्याय में भूविज्ञान एवं उच्चावच ,का वर्णन किया गया है। क्योंकि किसी क्षेत्र का भूमि उपयोग वहां की भूमि की बनावट एवं भौतिक आकृतियों से घनिष्ट रूप से प्रभावित होती है। द्वितीय अध्याय में जिले के अपवाह-तंत्र(Drainage) एवं अपवाह प्रारूप का वर्णन निहित है। तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय में जलवायु एवं मृदाओं का उल्लेख किया गया है। क्यों कि किसी भी क्षेत्र के भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले तत्वों में जलवायु एवं मिट्टियों का स्थान सर्वोपरि है। पंचम अध्याय में प्राकृतिक वनस्पतियों का अध्ययन किया गया है। शस्यवितरण एवं शस्य प्रारूपों केनिर्धारण में मिट्टियों की नमी धारणशक्ति का(Moisture capacity) गहरा प्रभाव पड़ता है तथा भूमिगत जल इस धारण शीलता को प्रभावित करता है।

(ब) द्वितीय खण्डके अन्तर्गत सतना जिले के भूमि उपयोग का सविस्तार अध्ययन किया गया है।इसमें षाष्टम् अध्याय में भूमि उपयोग तथा उसका वर्गीकरण सप्तम में कृषि तकनीक एवं शस्य वितरण स्पष्ट किया गया है।

अष्टम् अध्याय में शस्य संयोजन एवं शस्य विभागों का अध्ययन निहित है। तृतीय खण्ड में सम्पूर्ण जिले के भूमि उपयोग का प्रादेशिक दृष्टि से अध्ययन करने हेतु प्रतिदर्शग्रामों (Sample Villages) का चयन किया गया है। इसके अन्तर्गत नवम् अध्याय में प्रतिदर्श ग्राम के चुनाव का आधार तथा दशम् अध्याय में जिले के चुने हुये आठ प्रमुख ग्रामों में भूमि उपयोगों का विभिन्न पहलुओं के आधार पर अध्ययन किया गया है।

एकादश अध्याय में सतना जिले के भूमि-उपयोग की समस्यायें एवं उनके समाधान हेतु प्रस्तुत सुझाव दिये गये हैं। जनसंख्या का भूमि से अनुपात, खाद्य सन्तुलन एवं पोषण (Food Blance & Nutrition) भूमि की धारण-क्षमता (Carrying capacity of land) आदि का अध्ययन किया गया है। अन्त में बाणसागर बहुउद्देश्यीय परियोजना का सतना जिले के भूमि उपयोग में सम्भावित प्रभाव स्पष्ट किया गया है।